इंडिया लिटरेसी बोर्ड

साक्षरता निकेतन

India Literacy Board

Literacy House

इण्डिया लिटरेसी बोर्ड साक्षरता एवं शिक्षा के लिए समर्पित एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति–प्राप्त संस्था है, जिसकी स्थापना अमेरिकी नागरिक एवं प्रख्यात शिक्षाविद् व समाजसेवी डॉ. वेल्दी हॉनसिंगर फिशर (1879-1980) के द्वारा महात्मा गाँधी की प्रेरणा से उ.प्र. के नैनी, प्रयागराज में साक्षरता निकेतन के रूप में 13 फरवरी, 1953 को की गयी थी। कालान्तर में उ.प्र. के तत्कालीन राज्यपाल श्री के.एम. मुंशी के आग्रह पर डॉ. फिशर के द्वारा लखनऊ के इस परिसर में 'इण्डिया लिटरेसी बोर्ड' की स्थापना वर्ष 1956 में की गई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य निरक्षरता को समाप्त कर समाज को ज्ञान के आलोक से प्रदीप्त करना है। डॉ. फिशर का अमृत वाक्य "अंधकार को क्यों धिक्कारें, अच्छा है एक दीप जलायें" भारत में साक्षरता का प्रकाशपुंज बनकर विकसित हुआ। निम्नलिखित चार अवधारणाएँ साक्षरता निकेतन, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के मुख्य आधार स्तम्भ हैं–

1. कार्यात्मक साक्षरता 2. खाद्य उत्पादन 3. पारिवारिक जीवन शिक्षा 4- भय निवारण

लगभग 20 एकड़ में फैले हुए साक्षरता निकेतन परिसर का ले–आउट एवं डिजाइन प्रख्यात वास्तुविद् लॉरी बेकर के द्वारा तैयार किया गया था, जो कि तत्समय एक आदर्श शिक्षा ग्राम के रूप में पर्यावरण के अनुकूल बनाया गया था, जिसमें पर्याप्त हवा, नैसर्गिक प्रकाश एवं हरियाली की व्यवस्था समाहित है। साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा से जुड़े कार्यकर्ताओं का प्रशिक्षण, असाक्षरों एवं नव साक्षरों के लिए पठन–पाठन सामग्री का निर्माण एवं प्रकाशन, दक्षता–विकास कार्यक्रम, पारिवारिक जीवन एवं जनसंख्या शिक्षा आदि इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के महत्वपूर्ण योगदान हैं। भारत के अनेक उच्च पदस्थ विशिष्टजन, शिक्षाविद् एवं उद्योगपति आदि इस संस्था के संस्थापक मण्डल के सदस्य रहे हैं। भारत के अनेक प्रतिष्ठित विभूतियों के द्वारा इस संस्था का भ्रमण कर इसके कार्यों की सराहना की गई है। साक्षरता के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्यों के लिए डॉ. फिशर को अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है, जिसमें रेमन मैग्सेसे अवार्ड (1964), जवाहर लाल नेहरू अवार्ड (1968) एवं यूनेस्को अवार्ड (1970,1978,1983 एवं 1988) प्रमुख हैं। साक्षरता निकेतन परिसर में स्थित महत्वपूर्ण भवनों यथा– 1- प्रशासनिक भवन एवं कबीर थियेटर 2- हॉस्टल एवं मेस 3- प्रार्थना भवन 4- डॉ. वेल्दी फिशर हाउस म्यूजियम 5- स्कूल ऑफ राइटिंग 6- राज्य संसाधन केन्द्र 7- केन्द्रीय पुस्तकालय 8– साक्षरता संग्रहालय का संक्षिप्त विवरण सम्बन्धित भवनों के समक्ष प्रस्तुत किया गया है।

India Literacy Board is a renowned Institution of international repute supporting literracy and education. It was founded by a renowned educationist & social worker of USA Dr. Welthy Honsinger Fisher (1879-1980) under the inspiration of Mahatma Gandhi as Literacy House on 13 February, 1953 at Naini, Prayagraj . Later in 1956, at the invitation of the then Governor of Uttar Pradesh Mr. K.M. Munshi, she established "India Literacy Board" in the present campus at Lucknow. The main objective of this organization is to eliminate illiteracy and enlighten the society with the light of knowledge. Dr. Fisher's motto "It is better to light a candle than to curse the darkness" developed as a beacon of literacy in India. The following four concepts are the main pillars for establishment of India Literacy Board (Literacy House)

1. Functional Literacy 2. Food Production 3. Family Life Education 4. Fear Removal

The layout and design of this campus, spread over approx. 20 acres, was prepared by the renowned British architect Laurie Baker as an environment-friendly literacy village. Training of workers related to literacy and adult education, production and publication of teaching & learning materials for illiterate and neo-literates, skill development programs, population and family life education are the major significant contributions made by India literacy Board. Many high profile dignitaries, educationists and industrialists of India have been the founding members of this prestigious institution. Many eminent dignitaries have visited this campus and appreciated its work. Dr. Fisher was honoured with many national and international awards for her outstanding & exemplary works in the field of literacy, including Ramon Magsaysay Award (1964), Jawahal Lal Nehru Award (1968) and UNESCO Award (1970, 1978, 1983 & 1988). Separate descriptive panels at each important building in the campus have been provided in the following order -- 1- Administrative Building & Kabir Theatre 2- Mess & Hostel 3- House of Prayer 4- Welthy Fisher House Museum 5- School of Writing 6- State Resource Centre 7- Central Library 8- Literacy Museum.

साक्षरता संग्रहालय

Literacy Museum

संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से निर्मित यह संग्रहालय साक्षरता से सम्बन्धित अपने प्रकार का प्रथम एवं अभिनव संग्रहालय है, जिसमें साक्षरता की प्राचीन काल से लेकर के वर्तमान समय तक की अविरल यात्रा को विभिन्न परम्परागत एवं अत्याधुनिक तकनीक के माध्यमों से दर्शाया गया है। तीन मंजिला इस संग्रहालय में कुल सात वीथिका सहित उच्चस्तरीय सुलभ प्रसाधन सुविधा, अल्पाहारगृह एवं स्मृतिचिन्ह के दुकान आदि का प्राविधान किया गया है। अभिविन्यास वीथिका में संग्रहालय के विषय में समग्र जानकारी आगन्तुकों को उच्च तकनीक के माध्यम से प्रदान की जाती है। सामुदायिक एवं कार्यात्मक साक्षरता गैलरी में विभिन्न कालखण्डों के दौरान विभिन्न सामुदायों के मध्य साक्षरता का प्रभाव प्रदर्शित किया गया है और बाल गैलरी में बच्चों के लिए रोचक एवं सुगम संवादात्मक माध्यमों से साक्षरता के आधुनिक आयामों को प्रस्तुत किया गया है। यह संग्रहालय लखनऊ के पर्यटन-क्षितिज का एक अभिनव आयाम है जो कि देशी-विदेशी पर्यटकों में बहुत लोकप्रिय है।

This museum, built with the assistance of the Ministry of Culture, Government of India is the first and innovative museum of its kind related to literacy, in which the continuous journey of literacy from ancient times to the present time has been shown through various traditional and modern technologies. In this three-storey museum, provision has been made for a total of seven galleries along with high-class toilet facilities, snack bar and souvenir shop etc. In the Orientation Gallery, complete information about the museum is provided to the visitors through modern technologies. In the Community and Functional Literacy Gallery, the impact of literacy among different communities during different periods has been displayed. In the Children's Gallery, modern dimensions of literacy have been presented through interesting and accessible interactive mediums for children. This museum is an innovative dimension of the tourism horizon of Lucknow which is very popular among the domestic and foreign tourists.

केन्द्रीय पुस्तकालय

Central Library

केन्द्रीय पुस्तकालय भवन की स्थापना डॉ. वेल्दी फिशर के द्वारा वर्ष 1970 में की गई। इस पुस्तकालय की विशेषता ड्यूप्लेक्स डिजाईन में बना हुआ इसका विशाल कक्ष है, जिसके भूतल पर विभिन्न विषयों की लगभग 50,000 पुस्तकों का संग्रह है तथा प्रथम तल पर पाठकों के लिए वाचनालय है। प्रथम तल पर इस संस्था की संस्थापिका डॉ. वेल्दी फिशर के जीवन से सम्बन्धित चित्र, पुरस्कार, उनके हस्त-लिखित संस्मरण तथा भारत सरकार के द्वारा उनकी स्मृति में वर्ष 1980 में जारी किया गया डाक टिकट भी उपलब्ध है। इसमें पर्याप्त प्रकाश हेतु खम्भों के साथ दिवार के स्थान पर बड़े-बड़े शीशों का प्रयोग किया गया है। यह पुस्तकालय प्रौढ़ एवं अनौपचारिक शिक्षा तथा समाजसेवा के क्षेत्र में काम करने वाले शोधार्थियों, गैर सरकारी संगठनों और सामाजिक कार्यकार्ताओं के मध्य बहुत लोकप्रिय है।

This Central Library Building was established by Dr. Welthy Fisher in the year 1970. The speciality of this library is its huge hall built in duplex design, on the ground floor of which there is a collection of about 50,000 books on various subjects and on the first floor there is a reading space for the readers. On the first floor, pictures related to the life of Dr. Welthy Fisher, the founder of this institution, awards, her hand written memoirs and a 30 paise postage stamp issued in her memory by the Government of India in the year 1980 are also available. In this building, big glasses have been used instead of walls for adequate-lighting. This library is very popular among researchers, NGOs and social workers working in the field of adult and non-formal education and social service.

राज्य संसाधन केन्द्र, उ.प्र.

State Resource Centre, U.P.

वर्ष 1959 में इस भवन में 'पंचायती राज प्रशिक्षण केन्द्र' का संचालन प्रारम्भ किया गया, जिसमें ग्राम प्रधानों एवं पंचायतों तथा खण्ड विकास समितियों के सदस्यों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता था। कालान्तर में, 1965 में कारखानों एवं मिलों के श्रमिकों के लिए साक्षरता एवं प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया। भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 1978 को राष्ट्रीय स्तर पर प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम का शुभारम्भ किया और इस संस्था को 'राज्य संसाधन केन्द्र, उ. प्र.' के रूप मे मान्यता प्रदान किया। इसमें प्रशिक्षण हेतु दो सुसज्जित सभागार भी हैं। राज्य संसाधन केन्द्र के द्वारा 35 प्रकार के प्रशिक्षण मैनुअल्स एवं अन्य प्रशिक्षण सामग्री तैयार की गई। इसी प्रकार विभिन्न भाषा क्षेत्रों के असाक्षरों तथा नव-साक्षरों के लिए लगभग 240 प्रकार के पठन-पाठन की पुस्तकें तैयार की गई और विभिन्न विषयों पर 37 शोध एवं मूल्यांकन का कार्य किया गया। यहाँ भारत सहित कुल 9 देशों के हजारों प्रौढ़ शिक्षा कार्यकर्ताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम संचालित किया गया।

In the year 1959, operation of "Panchayati Raj Training Center" was started in this building, in which training was provided to Gram Pradhans and members of Panchayats and Block Development Committees. Later, in 1965, a program of literacy and adult education for workers in factories and mills was started. The Government of India launched the Adult Education Program at the national level on October 2, 1978 and recognized this institution as "State Resource Center, Uttar Pradesh". It also has two well-equipped auditoriums for training. 35 types of training manuals and other training materials were prepared by the State Resource Center. Similarly, 240 types of reading books were prepared for illiterates and neo-literates of diffrent language areas and 37 research and evaluation work was done on various subjects. Here, training programs were conducted for thousands of adult education workers from a total number of 9 countries including India.

स्कूल ऑफ राइटिंग

School of Writing

साक्षरता निकेतन के अन्य भवनों के साथ ही इस भवन का निर्माण हुआ। इसमें सामने की ओर टैगोर हॉल के नाम से एक सभाकक्ष है, जिसके दोनों ओर गोल आकार में कुल 12 कमरे बनाये गये हैं। साक्षरता के प्रचार-प्रसार हेतु पठन-पाठन सामग्री के निर्माण एवं सम्पादन आदि के कार्य हेतु लेखकों कों संस्था द्वारा आमंत्रित किया जाता है, जो इन्हीं कक्षों में रूकते हैं, टैगोर हॉल में विचार-विमर्श करते हैं और प्रौढ़ साहित्य का निर्माण कार्य सम्पन्न करते हैं। इस भवन में लेखकों की कार्यशाला आयोजित की जाती है, जिसमें लेखन सम्बन्धी समस्त विधाओं के नवोदित लेखकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है। यहाँ विभिन्न विषयों पर नव-साक्षरों के लिए कुल 450 प्रकार की पुस्तकें तैयार की गई और 781 नये लेखक तैयार किये गये।

This building was also constructed along with other buildings in the campus of Literacy House. There is a meeting hall named Tagore Hall in the front, on both sides of which a total of 12 rooms have been made in a round shape. For the promotion of literacy, writers are invited by this institution for the work of creation and editing of reading materials etc, who stay in these rooms and hold discussions in Tagore Hall. Writers' workshop is also organized in this building, in which training programs are conducted for budding writers of all genres related to writing . Here, a total of 450 types of books for neo-literates were prepared on various subjects and 781 new writers were produced.

साक्षरता निकेतन
लखनऊ

वेल्दी फिशर हाउस म्यूजियम

Welthy Fisher House Museum

साक्षरता निकेतन की संस्थापिका के इस आवास का निर्माण भी लॉरी बेकर की वास्तुकला के अनुरूप इण्डिया लिटरेसी बोर्ड के अन्य भवनों के साथ ही वर्ष 1956 में हुआ। इस आवास में एक बैठक कक्ष, रसोईघर एवं भोजन कक्ष तथा बरामदा के अतिरिक्त पीछे कोर्टयार्ड स्थित है। कमरों में हवा के आवागमन हेतु दीवारों में नीचे की ओर जालीदार छोटे झरोखों का भी प्राविधान किया गया है। आवास में डॉ.वेल्दी फिशर के द्वारा प्रयोग किये जाने वाली सभी वस्तुओं, यथा- उनका सोफा, बेड, आलमारी, श्रृंगारदान, डाइनिंग टेबुल, बर्तन एवं अन्य सामग्रियों को संरक्षित करते हुए पूर्व की भाँति यथास्थिति में प्रदर्शित किया गया है। इसको देखने से पता चलता है कि लगभग 72 वर्ष की आयु में अमेरिका को छोड़कर यहाँ आई उस महान ''अक्षरदात्री माँ'' वेल्दी फिशर की जीवन शैली में कितनी सादगी और त्याग का भाव था। इस भवन में भारत की तत्कालीन प्रधानमंत्री और कनाडा के राजदूत सहित अनेक महान विभूतियों का आगमन हो चुका है।

This residence of the founder of Literacy House was also constructed in the year 1956 along with other buildings of India Literacy Board as per the architectural design of Laurie Baker. This residence has a living room, bedroom, kitchen and dining room and in addition to the verandah, there is a courtyard located at the back. Provision has also been made for small latticed openings at the bottom of the walls for air circulation in the rooms. All the items used by Dr. welthy Fisher in the residence, such as her sofa, bed, wardrobe, dressing table, dining table, utensils and other materials, have been preserved and displayed in the same condition as before. These things make us understand how much simplicity and sacrifice was there in the lifestyle of the great "Mother of Letters" Welthy Fisher, who left America and came here at the age of 72. Many great persolities have visited this building including the then Prime Minister of Inidia & the Canadian Ambassador etc.

साक्षरता निकेतन
लखनऊ

प्रार्थना भवन

House of Prayer

भारतीय वास्तुशास्त्र के अनुरूप लॉरी बेकर के द्वारा साक्षरता निकेतन परिसर के मध्य भाग में एक अष्टकोणीय प्रार्थना-भवन को डिजाईन किया गया, जिसके चारों दिशाओं में चार दरवाजे हैं। इस भवन का शिलान्यास वर्ष 1959 में भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन के द्वारा किया गया था। इसमें चारों ओर से प्राकृतिक प्रकाश एवं वायु के लिए शीशे की खिड़कियों एवं लकड़ी के झरोखों का प्रयोग किया गया है। इसके फर्श को लकड़ी का प्रयोग कर सीढ़ीनुमा बनाया गया है, जिस पर बैठकर प्रार्थना की जाती है। इसके मध्य में एक छोटा सा फौव्वारा लगाया गया है, जो ध्यान केन्द्रित करने में सहायक होता है। इसके बाहरी हिस्से में चारों ओर आर्कषक हरियाली है और यहाँ एक गोलाकार छोटा जलाशय भी बनाया गया है, जिसमें अनेक मछलियाँ सभी आगन्तुकों को आकर्षित करती हैं।

According to Indian Vaastu Shastra, an octagonal prayer hall was designed by Laurie Baker in the central part of the Literacy House Campus, which has four doors in four directions. The foundation stone of this building was laid in the year 1959 by the then Vice President of India, Dr. Sarvepalli Radhakrishnan. In this, glass windows and wooden windows have been used for natural light and air from all sides. Its floor has been made like a staircase using wood, on which prayers are done while sitting. A small fountain has been installed in its middle, which helps in meditation. Its outer part has attractive greenery all around and a circular small reservoir has also been built here, in which many fishes attract all the visitors.

साक्षरता निकेतन
लखनऊ

हॉस्टल एवं मेस

Hostel and Mess

लॉरी बेकर की वास्तुकला पर निर्मित इस भवन में लगभग 125 व्यक्तियों के ठहरने एवं उनके जलपान व भोजन आदि हेतु भोजनालय की व्यवस्था उपलब्ध है। इसमें महिला एवं पुरूष अन्तःवासियों के लिए पृथक-पृथक व्यवस्था है। इण्डिया लिटरेसी बोर्ड द्वारा शिक्षा, साक्षरता, दक्षता-विकास, व्यवसायिक प्रशिक्षण, आपदा प्रबन्धन, एवं राष्ट्रीय सेवा आदि से जुड़े हुए अनेक विषयों पर यहाँ विभिन्न समयावधि के शिक्षण-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन वर्ष-पर्यन्त किया जाता है। इन कार्यक्रमों के प्रतिभागी महिला-पुरूष इसी हॉस्टल एवं मेस भवन में आवासित होते हैं। इसके मेस में भारत के अनेक महान विभूतियों द्वारा अन्न ग्रहण कर संस्था को धन्य एवं गौरवान्वित किया जा चुका है।

Built on the architecture of Laurie Baker, this building has arrangements for accommodation for about 125 people and a dining hall for their refreshments and food etc. In this, separate arrangements are available for male and female inmates. India Literacy Board organizes training programs of various duration throughout the year for vocational training, disaster management, and national service etc. Both male and female participants of these programs stay in this hostel and mess building. Many great personalities of India have blessed and made the institution proud by having food in its mess.

साक्षरता निकेतन
लखनऊ

प्रशासनिक भवन एवं कबीर थियेटर

Administrative Building and Kabir Theater

इस भवन का शिलान्यास दिनांक 29 अक्टूबर, 1956 को लखनऊ विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. राधकमल मुखर्जी के द्वारा किया गया था। इसकी वास्तुकला एवं योजना विश्व-विख्यात वास्तुविद लॉरी बेकर के द्वारा डॉ. वेल्दी फिशर की कल्पना के अनुरूप बनाया गया है। इस भवन के अन्दर प्रवेश-हॉल की दीवारों पर इण्डिया लिटरेसी बोर्ड की संस्थापिका के आदर्श, क्रिया-कलाप एवं जीवन-वृत्त से सम्बन्धित विवरण प्रदर्शित किये गये हैं। इस भवन में निदेशक एवं सचिव, इण्डिया लिटरेसी बोर्ड का कार्यालय स्थित है। इसी भवन से लगा हुआ 200 व्यक्तियों की क्षमता वाला कबीर थियेटर स्थित है, जिसमें अनेक राष्ट्रीय एवं अन्तराष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम वर्ष-पर्यन्त आयोजित होते रहते हैं। इन कार्यक्रमों में प्रायः भारत सरकार एवं उत्तर प्रदेश सरकार के अनेक संवैधानिक पदाधिकारियों एवं अतिविशिष्टजनों द्वारा प्रतिभाग किया जाता रहा है। रोचक तथ्य यह है कि जिस कालखण्ड में इसका निर्माण किया गया था, उस समय भारत में ओपेन एअर थिएटर बहुत प्रचलन में नहीं था।

The foundation stone of this building was laid on October 29, 1956 by Dr, Radhakamal Mukherjee, Vice Chancellor of Lucknow University. Its architecture and planning was designed by world-renowned architect Laurie Baker as per the imaginations of Dr. welthy Fisher. Inside this building, details related to the ideals, activities and biography of the founder of India Literacy Board have been displayed on the walls of the entrance hall. The office of the Director and Secretary, India Literacy Board is situated in this building. Kabir Theater with a capacity of 200 persons is located adjacent to this building in which many national and international level programs are organized throughout the year. These programs are often attended by many constitutional functionaries and diginitaries of Govt. of Goverment of India & Govt. of U.P. It is interesting to note that when it was built, the concept of open air theatre was not so common in India.